धूतपापेश्वर

।। आरोग्यचिंतन ।।

पत्रिका

।। शास्त्रतत्त्वप्रकाशार्थं एषा चिन्तनपत्रिका ।।

अक्टूबर २०१९

AROGYACHINTAN PATRIKA

संपादकीय

आज का आयुर्वेद का विद्यार्थी, आयुर्वेद का अध्ययन संस्कृत में लिखे हुए आयुर्वेद ग्रंथोके अनुवाद पढकर करना चाहता है। परंतु इसप्रकार का आयुर्वेद पठन शायद मूल संस्कृत से किए गए आयुर्वेद के पठन की अपेक्षा निम्नश्रेणी का कहा जा सकता है।

आयुर्वेद जिसे अनादि, अनंत विज्ञान कहते है, संपूणत: संस्कृत में लिखे गए ग्रंथो में उपलब्ध होता है। चरक, सुश्रुत, वाग्भट आदि ग्रंथ संस्कृत में हि लिखे गए है। परंतु आज का विद्यार्थी संस्कृत अनभिज्ञ होने के कारण चरक, सुश्रुत आदि के मराठी/हिंदी/अंग्रेजी/गुजराती अनुवाद पढकर आयुर्वेद का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। यह पद्धति सर्वथा ठिक नहीं हैं, कारण अनुवाद में कई बार गलतियाँ होती हुई देखी गई है। वस्तुत: आधुनिक कालमें आयुर्वेद का अध्ययन प्राचिन ढंग से होना चाहिए, जिससे की, आयुर्वेद का अवबोध उचित हो और आधुनिक कालमें स्वास्थ्य रक्षा के लिए उसका उपयोग हो।

अनुवाद भाषा का नहीं, बल्कि आयुर्वेद संकल्पनाओं का अनुवाद आधुनिक संकल्पानाओं में होना अत्यंत आवश्यक है। संप्रति Translational Medicine नाम से एक नविन विचार पद्धति प्रचलित हो रही है। सन २००० में Translational Research की व्याख्या स्थूल रूपसे – 'Walking the bridge between idea and cure', इस पद्धति से की गई है। आयुर्वेद संकल्पनाऐ आधुनिक परिभाषा में लाना यद्यपि कठीन है, परंतु आज यह करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। कुछ वर्षो पश्चात् TM का अर्थ 'from bench to bedside' इस वाक्प्रचार से प्रस्थापित हुआ। प्रयोगशाला में किए गए वैज्ञानिक परीक्षाओं के पश्चात् उपलब्ध ज्ञान उपरुग्ण पध्दती में रोग विनिश्चय, रोगचिकित्सा और रोगप्रतिरोध के लिए उपयोगी होने लगा। यह प्रयोगशालेय ज्ञान रोगी के हित के लिए Translate किया गया।

इस पद्धति से प्रयोगशालेय ज्ञान की उपरुग्णीय पद्धति में उपयोगिता के रूप में परिवर्तन अत्यंत आसान हुआ। इसी Translational Medicine पध्दती के उपयोग करते हुए, हमें आयुर्वेदोक्त रोगनिदान और रोगचिकित्सा के संकल्पना, आधुनिक चिकित्सा पद्धति में लाना सुलभ होता है। इस पद्धति का अंगीकार करने से आयुर्वेद आधुनिक चिकित्सा को उपबृंहित कर पाएगा।

अक्टूबर ३, २०१६ को Yoshinori Ohsumi इस वैज्ञानिकको शरीरक्रिया विज्ञान का Nobel Prize प्राप्त हुआ। आयुर्वेदोक्त लंघन की कार्मूकता आधुनिक परिभाषा में वैज्ञानिक Yoshinori Ohsumi ने स्पष्ट की। इस प्रक्रियों को Autophagy यह नाम दिया गया है।

हारित संहिता इस आयुर्वेद के प्रसिध्द ग्रंथ के इस श्लोक में –

परिश्रममिताहारौ भुगतावश्विनीसुतौ।
तावनादृत्य नैवाहं वैद्यमन्यं समाश्रये।।

परिश्रम और मिताहार को आश्विनी कुमार की उपमा दी गई है। वैज्ञानिक Yoshinori Ohsumi की Autophagy यह उपलब्धी परिश्रम और मिताहार की कार्मूकता स्पष्ट करती है। परिश्रम और मिताहार किस मार्ग से आरोग्यदायी होते है इसका आधुनिक स्पष्टीकरण Autophagy से दिया गया है। TM सिध्दांत का किस प्रकार लाभ होता है, इसका यह उदाहरण है।

चरक संहिता के अनुसार उदावर्ता योनिव्यापद् में वातप्रकोप के कारण सकष्ट आर्तप्रवृत्ती होती है।

वेगोदावर्तनाद्योनिमुदावर्तयतेऽनिलः। सा रुगार्ता रजः कृच्छ्रेणोदावृत्तं विमुञ्चति।।
आर्तवे सा विमुक्ते तु तत्क्षणं लभते सुखम्। रजसो गमनादूर्ध्वं ज्ञेयोदावर्तिनी बुधैः।।
च. चि. ३०/२५–२६

आधुनिक विज्ञान में उदावर्ता योनिव्यापद् की समानता Pre-Menstrual Syndrome (PMS) इस व्याधी से की जा सकती हैं। PMS के लक्षण उदावर्ता योनिव्यापद् से मिलते–जुलते है।

Psychoneuroendocrinology (2003), के लेख में उल्लेखित है की, लगभग ५० % महिलाएं आर्तवकाल में PMS के लक्षणों से पीडित होती है। २०–३० % महिलाएं अत्यधिक पीडित होती हुई दिखाई देती है। जब की ३–८ % महिलाएं PMS के संपूर्ण लक्षण से ग्रस्त होती है।

American Journal Obstet Gynecology में प्रकाशित Clinical study में Calcium Supplement का PMS के शारीरिक और मानसिक लक्षणों में लाभ होता है, ऐसे दिखाया गया है।

Cochrane Database 2013, में प्रकाशित अनुसंधानो में भी यह दर्शाया गया है की, PMS से पीडित महिलाओं में Serotonin इस रसायन की कमी होती है। इसलिए Serotonin के वर्धन करनेवाले औषध PMS की चिकित्सा में उपयोगी होंगें यह सिध्द होता है। अश्वगंधा का निरंतर उपयोग करने से Serotonin शरीर में कार्यरत होता है और परिणाम स्वरुप PMS में अनेक लाभ होते है।

Obstet Gynecol Sci, 2019, में प्रकाशित अध्ययन यह दर्शाता है की, Vitamin D और Calcium Supplement के उपयोग से PMS में उपशय मिलता है। PMS की अन्य आधुनिक चिकित्सा के अपेक्षा Vitamin D और Calcium Supplement का उपयोग सुरक्षित और परिणामकारक दिखाई देता है।

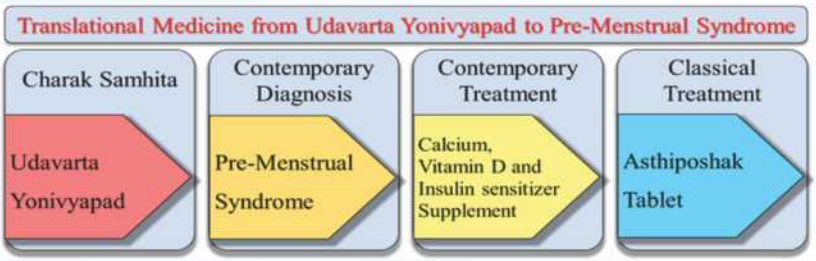

आचार्य चरक उदावर्ता योनिव्यापद् चिकित्सा में स्पष्ट कहते है की, वातदोष के बिना योनिव्यापद् नहीं होता।

नहि वाताद्दते योनिर्नारीणां संप्रदुष्यति।
शमयित्वा तमन्यस्य कुर्याद्दोषस्य भेषजम्।। – च.चि.३०/११५

उदावर्ता योनिव्यापद् को PMS के रुप में समझना, TM के उदाहरणों में से एक है। इस तरह हम आधुनिक जगत् की बीमारीयों के लिए आयुर्वेद उपचारों का आदान–प्रदान कर सकेंगे। ऐसे प्रतित होता है की TM के सिध्दांतों से हम कई आयुर्वेद संकल्पनाओं का अनुष्ठान सुलभ और ज्ञानपूर्वक होगा।

वैद्य.मिलिंद पाटील
वैद्यकीय सलाहकार
विक्रम डिविजन,श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

Lost in the Translation: Johns Hopkins Medicine

If academic medicine doesn't take a proactive role in undertaking these imperatives, we may find that our mission of advanced medical therapy through discovery gets lost in the translation.

- Bill Brody

NVP: एक ज्वलंत समस्या

एक लेख के अनुसार प्रायः बहुधा ७०–८०% गर्भवती महिलाएँ, गर्भावस्था में मिचली और उलटी (NVP) से प्रभावित होती है।

यह लक्षण प्रायः गर्भाधान के दुसरे सप्ताह बाद शुरु होते है, गर्भाधान के बाद ९ से १६ सप्ताह तक चोटी पर रहते है और सामन्यतः २२ सप्ताह बाद सामान्य हो जाते है । १०% महिलाओं में गर्भाधान के बाद यह लक्षण लंबे समय रहकर, प्रसवकाल तक बने रहते है।

NVP गर्भवती के जीवन की गुणवत्ता को काफी कम कर सकता है। NVP के लक्षण गर्भवती में उच्च रक्तचाप और प्रीएक्लेम्पसिया की संभावना को बढाता है। NVP के लक्षणों से गर्भवती स्त्री में अवसाद जैसे मानसिक समस्याओं की वृध्दि होती है। इससे १०–३५ % रूग्णों के बालसंगोपन और परिवारिक संबंधो पर नकारात्मक प्रभाव पड सकता है।

हालांकि NVP के कारण गर्भवती स्त्रियों में मृत्यु की दर अधिक है, परंतु इन लक्षणों की अनदेखी की जाती है। (Gastroenterol Clin North Am.2011 Jun) इसलिए गर्भावस्था मे जी मिचलाने की चिकित्सा करना महत्त्वपूर्ण है, अन्यथा

जलपान या सोंठ जैसे घरेलु नुस्खे का उपयोग विफल होने पर, यह स्त्री हाइपरएमेसिस ग्रेविड्रम (HG- NVP की गंभीर अवस्था) से पीडित होगी। NVP से पीडित एक तिहाई स्त्रियों में रोगविषयक विशिष्ट लक्षण दिखाई देते है। इन स्त्रियों में से कुछ HG से पीडित होंगी, जो गर्भावस्था के पहले तीन महिने के दौरान अस्पताल में प्रवेश कराने का आम संकेत है।

इन सभी उपद्रवों से बचने हेतु, NVP का प्रारंभिक उपचार ही NVP के लक्षणों से राहत प्रदान कर HG के प्रगति को रोकने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

एक वैश्विक विश्लेषण के अनुसार, लगभग आधी गर्भवती स्त्रियां एच. पाइलोरी से संक्रमित होती है और एशिआई महाद्वीप में इस संक्रमण की संभावना ४४% है। एच. पाइलोरी (हेलिकोबॅक्टर पाइलोरी) एक ग्राम–निगेटिव जीवाणु है, जो आमाशय और ग्रहणी में जीर्ण शोथ (Gastritis) का कारण बनता है, आमाशय के आंतरिक त्वचा पर आक्रमण कर, वॅक्युलेटिंग साइटोटॉक्सिन–A (Vac-A) नामक विष निर्माण कर व्रण को उत्पन्न करता है।

NVP को आयुर्वेद के अनुसार अम्लपित्त माना जा सकता है। माधव निदान अनुसार अनेक जीवन–शैली घटक, अम्लपित्त (हाईपर एसिडिटी) के संप्राप्ती घटक है।

विरुद्धदुष्टम्लविदाहिपित्तप्रकोपिपानान्नभुजो विदग्धम्।
पित्तं स्वहेतूपचितं पुरा यत्तदम्लपित्तं प्रवदन्ति सन्तः।। – मा.नि. ५१/१

आधुनिक शास्त्र ने अब स्थापित भी किया है कि यह दुष्टपान (दूषित पेय पदार्थ) और दुष्टान्न अम्लपित्त के प्रमुख हेतु है और एच. पाइलोरी, ई. कोलाई, एन्टामीबा हिस्टोलिटिका से संक्रमित होते है, जो आमाशय विकार उत्पन्न करते है। अब यह अच्छी तरह से स्थापित है कि एच. पाइलोरी का आमाशय में स्थानसंश्रय और NVP संप्राप्ती के बीच प्रबल संबंध है।

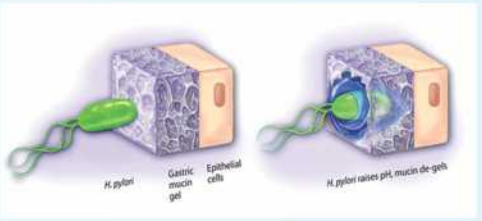

गर्भवती स्त्री में गर्भाधान के पश्चात् ९ से १६ सप्ताह में NVP के लक्षण बढते है। यह समय टेराटोजेन के संपर्क से गर्भ अंगप्रत्यंग उत्पत्ती में विकृती की संभावना का सबसे संवेदनशील समय है। इसलिए हमे एच.पाइलोरी संक्रमण और लक्षणों की चिकित्सा करने हेतु परीक्षित, सुरक्षित और प्रभावी उपचार की आवश्यकता है। एक आदर्श Anti-NVP औषध को अतिरिक्त अम्ल (ॲसिड) को निष्प्रभ, अम्लस्राव नियंत्रण, आमाशय की आंतरिक त्वचा का रक्षण, उपकला क्षति मे सुधार, मिचली और उलटी को कम कर एच. पाइलोरी का उन्मूलन करना चाहिए।

नव अध्ययनों के अनुसार प्राकृतिक आहारीय–पॉलीफेनोल इलॅजिक ॲसिड, एच.पाइलोरी के खिलाफ रोगाणुरोधी (एंटीमाइक्रोबियल) प्रभाव का प्रदर्शन करता है।

Ingredients	Actions	Contains
Shouktik Bhasma	Neutralizes acid effectively and quickly	Calcium Carbonate
Yashtimadhu, Triphala	Anti H. pylori	Ellagic Acid (Anti - H. pylori activity)
Triphala, Yashtimadhu, Vasa, Nimba, Pittapapada, Chirayata, Patol	Anti-Inflammatory	
Guduchi	Anti-Stress	
Yashtimadhu, Nimba	Wound Healing	

इस कार्य में अम्लपित्त मिश्रण एक वैज्ञानिक और आदर्श कल्प है। अम्लपित्त को समझने के लिए इन TM सिध्दांतो को लागू करने पर हमे एच. पाइलोरी उन्मूलन विचार और NVP उपचार के बीच की दूरी हटाने में सहायता मिलेगी।

अम्लपित्त मिश्रण सस्पेंशन

उपयुक्तता:
अविपाक,अम्लोद्गार,अरुचि,उत्क्लेश,हृद्दाह,परिणामशूल, गर्भावस्था में होनेवाला अम्लपित्त, आदि ।

सेवन से पहले बोतल अच्छी तरह से हिलायें ।

मात्रा एवं अनुपान :
१ से २ चम्मच दिन में २ से ३ बार विशेषतः भोजन से पहले या रोगावस्थानुसार ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 070003
Amlapitta Mishran Suspension

उपलब्धता :
२०० मि.लि., ४५० मि.लि.

रसराजेश्वर रस का उत्तम रसायन: अश्वगंधा

फरवरी २०१२ में प्रकाशित विश्व स्वास्थ्य संगठन के नवीनतम fact sheet के अनुसार विश्व में दूसरे स्थान पर होनेवाले मस्क्यूलोस्केलेटल (मांस-अस्थि) विकार संधीविकृती, विकलांगता और मृत्यु का कारण होते है।

विश्व स्तर पर विकलांगता का एकमात्र प्रमुख कारण पृष्ठशूल भी है। मस्क्यूलोस्केलेटल व्याधियों मे १५० से अधिक विकार शामिल हैं, जो वार्धक्य के कारण मांसपेशी, अस्थि, अस्थिसंधी और संबंधित उतकों जैसे कि कण्डरा और संधीबंधन सहित लोकोमोटर संस्थान को प्रभावित करते है। (International Classification of Diseases)

इन स्थितियों में मज्जा-मांस-अस्थि-संधि (न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल-एन.एम.एस.) अक्षमता जैसे कटिगत संधिवात (लंबार स्पॉन्डिलाइटिस), गृध्रसी (सायाटिका), मन्यागत संधिवात (सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस), एंकिलोजिंग स्पॉन्डिलाइटिस और आमवात (आर.ए.) शामिल है, जो कि वृद्धावस्था के व्याधी माने जाते थे, परंतु अब जीवन के किसी भी अवस्था में हो सखते है। ३ में से १ और ५ में से १ व्यक्ति (बच्चों सहित) क्रमशः पीडादायक और वैकल्यकारक मस्क्यूलोस्केलेटल व्याधी से ग्रस्त रहते है।

मस्क्यूलोस्केलेटल विकार दो प्रकार के होते है:

१. डीजनरेटिव (धातुक्षयजन्य)

२. ऑटोइम्यून (मार्गावरोधजन्य)

डीजनरेटिव (धातुक्षयजन्य) मस्क्यूलोस्केलेटल विकार के हेतु:

वार्धक्य, आघात, दोषपूर्ण आसन (posture), विशिष्ट अस्थिसंधी की अतिरिक्त चेष्टा से मांसपेशियों का क्षरण

व्यायामादपतर्पणात्प्रपतनाद्भंगात्क्षयाज्जागरात्।
वेगानां च विधारणादतिशुचः शैत्यादतित्रासतः।।
रुक्षक्षोभकषायतिक्तकटुकैरेभिः प्रकोपं व्रजेत्।
वायुर्वारिधरागमे परिणते चाह्नेऽपराह्णेऽपिच।।
(तीसटाचार्य-माधवनिदान-मधुकोष टीका)

ऑटोइम्यून (मार्गावरोधजन्य) मस्क्यूलोस्केलेटल विकार के हेतु:

अनपेक्षित ऑटोइम्यून प्रतिक्रिया (इन्टरल्युकिन्स और टी.एन. एफ) से उत्पन्न अस्थिसंधी का जीर्णशोथ जो न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों का एक महत्वपूर्ण कारण है। वार्धक्यजन्य शोथ प्रतिक्रिया सर्व शरीर में शोथ को सक्रिय कर आम अथवा अग्निमांद्य को उत्पन्न करती है। इस प्रकार वार्धक्य से बाधित होकर न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल संस्थान प्रभावित होता है। यही तथ्य आयुर्वेद द्वारा भी मान्य किया गया है, वृध्दावस्था में वातप्रकोप संधी जैसे कफ स्थान की दुष्टी कर वार्धक्यजन्य शोथ की उत्पत्ती करता है।

वायोः धातुक्षयात्कोपोमार्गस्यावरणेन वा । -च.चि. २८/५
देहे स्रोतांसि रिक्तानि पूरयित्वाऽनिलो बली।
करोति विविधान्व्याधीन्सर्वांगैकांगसंश्रितान्।। -च.चि. २८/१६

न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों की आधुनिक चिकित्सा-शस्त्रक्रिया, शोथनाशक, पीडानाशक और स्टेरॉयडल उपचार द्वारा की जाती है, जो महंगी, केवल शामक और दीर्घकालीन सेवन पर दुष्परिणाम दिखाती है। न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों के आधुनिक उपचार, चिकित्सा करते समय वार्धक्य का विचार नहीं करते हैं।

न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों की आधुनिक चिकित्सा में व्याधी के संप्राप्ती घटकों (जैसे वार्धक्य) का अंतर्भाव होना चाहिए, जो मज्जा और अस्थिसंधी संस्थान की क्षति को सुधारने में मदद करेगा। इसप्रकार की रसायन चिकित्सा धातुक्षय अथवा शोथ प्रतिक्रिया से उत्पन्न क्षति को ठीक कर पुनर्भव को रोक, न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों का वैश्विक बोझ कम करने में रामबाण होगी।

इसलिए मांसवह, अस्थिवह, मज्जावह स्रोतसों को बल देनेवाली चिकित्सा का विचार करना चाहिए, जैसे आयुर्वेद में वर्णित रसायन चिकित्सा। आयुर्वेद के शास्त्रीय ग्रंथो ने भी मर्म-अस्थि-संधि व्याधि और उनके उपचार का विस्तृत वर्णन किया है। वातविकारों को धातुक्षयजन्य और मार्गावरोधजन्य दो प्रकार में वर्गीकृत किया गया है। इसलिए आमपाचन और रसायन इसप्रकार द्विविध चिकित्सा न्युरोमस्क्यूलोस्केलेटल विकारों की पूर्ण चिकित्सा हो सकती है।

रसराजेश्वर रस यह रसायन, आमपाचक, अग्निदीपक और रसधातु शोधन घटकद्रव्य युक्त प्रबल रसौषधी है, जो उत्तम रसायन कर्म द्वारा सर्व वातव्याधी की उपचार आवश्यकता को परिपूर्ण करता है।

मन्याशूलं कटिशूलं अन्यान् वातगदान्हरेत्।
पक्षाघातादिरोगेषु बल्यो वृष्यो रसायनः।।

अश्वगंधा रसराजेश्वर रस का एक प्रमुख घटक द्रव्य है, जो वातकफशामक, धातुक्षयरोधक, शोथनाशक, बल्य और रसायन कार्य करता है।

अश्वगन्धाऽनिलश्लेष्मश्वित्रशोथक्षयापहा।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला।।

आधुनिक अध्ययन के अनुसार अश्वगंधा पीडानाशक, शोथनाशक और रसायन कार्य करता है। 'Journal of Clinical and Diagnostic Research. Jan 2019' में प्रकाशित एक अध्ययन 'Evaluation of Analgesic Activity of Standardised Aqueous Extract of Withania somnifera in Healthy Human Volunteers using Mechanical Pain Model' के अनुसार अश्वगंधा के सेवन से प्लेसिबो की अपेक्षा वेदना सहन करने की शक्ति में वृध्दि होती है, और वेदना का अभाव दीर्घकाल तक बना रहता हैं। 'Journal of Experimental and Applied Animal Sciences, June 2017' में प्रकाशित एक अध्ययन 'Suppression of inflammation and cartilage destruction by steroid-rich methanolic extract of Withania Somnifera: A study on collagen induced arthritic rats' के अनुसार चूहों में अश्वगंधा उपचार से NF-kB, TNF-α और MMP-8 के वृध्दि में अवरोध उत्पन्न होता है। अश्वगंधा ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस को कम कर तथा साइटोकिन्स का नियमन कर संधीवात में उपशयात्मक कार्य दर्शाता है।

इस प्रकार, रसराजेश्वर रस में अश्वगंधा उत्तम रसायन है।

रसराजेश्वेर रस

उपयुक्तता:
अर्दित, हनुस्तंभ, मन्यास्तंभ, हस्त-पाद चिमचिमायन, मन्याशूल, कटिशूल, शिरोकंप, कंपवात की कठोरता, पक्षाघात आदि ।

मात्रा एवं अनुपान :
१ से २ गोलियाँ दिन में एक या दो बार दशमूलारिष्ट, बलारिष्ट, महारास्नादि क्वाथ, अश्वगंधारिष्ट,कोष्ण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902604
Rasarajeshwar Rasa

उपलब्धता :
३० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

गुग्गुलः त्वक्सारता का एक रहस्य

स्वस्थ त्वचा उत्तम शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और सक्रिय जीवन का एक चिह्न है। पर्यावरण और जीवनशैली त्वचा के स्वास्थ्य को प्रभावित करते है। इंटरनेशनल लीग ऑफ डर्मेटोलॉजिकल सोसाइटीज ILDs ने त्वचा वार्धक्य को वैश्विक त्वचा स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण भव्य चुनौति के रूप में पहचाना है।

वार्धक्य एक समय निर्भर और प्राकृत प्रक्रिया है, जो त्वचा की संरचना और कार्य में परिवर्तन लाती है। वार्धक्य दो जैविक प्रक्रियाओं का एक संकर है:

१. आंतरिकः नैसर्गिक ह्रास

२. बाह्यः बाहरी वातावरण और त्वचा में परस्पर संबंध से परिवर्तन

दोनों प्रक्रियांओं के परिणामस्वरुप त्वचा की कार्यक्षमता में गिरावट होती है। बढती उम्र के साथ बाह्य प्रक्रिया, आंतरिक प्रक्रियांओं की गति को तेज कर त्वचा की कार्यक्षमता में भारी गिरावट लाकर उसे प्रभावित करती है। हम में से कोई भी इस प्रभाव से पूर्णतः बच नही पाएगा। विश्वभर में वृध्द व्यक्ति त्वक् असार बनने लगे हैं। त्वचा का असारत्व शुष्क त्वचा, खुजली, वैवर्ण्य, झुर्रियाँ, संक्रमण आदि जैसे स्थितियों की संभावना बढाकर त्वचा के सक्रियता में बाधा पहुंचाते हैं। रसायन औषधी त्वचा रोगों के उपचार में अत्यधिक लाभ करेगी। आचार्य चरक ने त्वक्सारता के लक्षण इस प्रकार प्रस्तुत किए है।

तत्र स्निग्धश्लक्ष्णमृदुप्रसन्नसूक्ष्माल्पगम्भीरसुकुमारलोमा सप्रभेव च त्वक् त्वक्साराणाम्।

सा सारता सुखसौभाग्यैश्वर्योपभोगबुद्धिविद्यारोग्यप्रहर्षणान्यायुष्यत्वं चाचष्टे।।

–च. वि. ८

भावप्रकाश कर्पूरादिवर्ग में गुग्गुल का वर्णन इस प्रकार किया गया है ।

वृष्यः सूक्ष्मः रसायनः बल्यः।

कफवातव्रणकुष्ठममारुतान् ...पिडकाग्रन्थिशोफकृमीञ्जयेत्।

गुग्गुलुः सर्वदोषहा।।

गुग्गुल सी.सी.एन. ११० स्किन फाइब्रोब्लास्ट सेल लाइन पर संरक्षणात्मक और पुनर्स्थापनात्मक प्रभाव दर्शाता है। (इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कॉस्मेटिक साइंस, २००२) गुग्गुल में इंट्रासेल्युलर ट्राइग्लिसराइड्स (कोषाणुगत मेद धातु) के निर्माण को बढावा देने अथवा इंट्रासेल्युलर ट्राइग्लिसराइड्स के क्षति को कम करने की क्षमता है, जिससे बडी और छोटी वलियों की गहराई कम होकर त्वचा को सुकुमार रूप मिलता है। (इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज, अक्टूबर, २००६)

बाकुची, गोमूत्र, कुटज, विडंग, निम्ब, चित्रक, त्रिवृत्, हरिद्रा, चव्य, कटुका, अतिविषा, देवदारु, मंजिष्ठा और गुडूचि जैसे घटकद्रव्य त्वक्सारता बढाते हैं। (बायोएक्टिव कम्पाउंडस फ्रॉम न्याच्युरल रिसोर्सेस अगेंस्ट स्कीन एजींग, फाइटोमेडिसिन, २०१२)

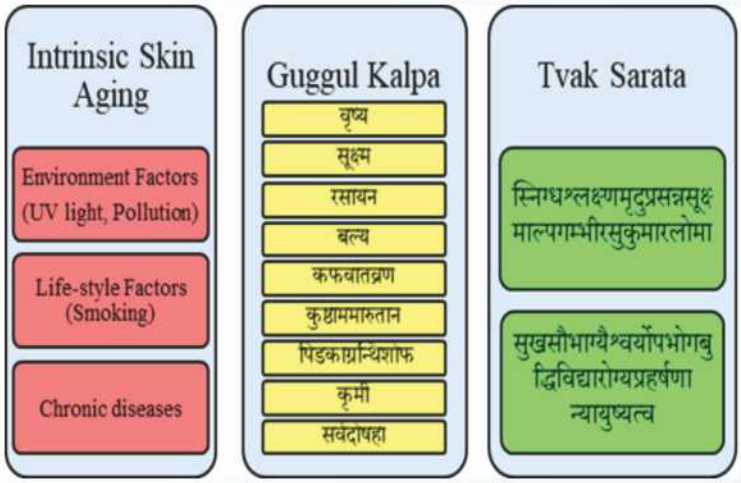

पंचतिक्त घृत गुग्गुल

उपयुक्तता:

कुष्ठ, वातव्याधि, नाडीव्रण, अर्बुद, भगंदर, अर्श, गुल्म, प्रमेह, वातरक्त, पीनस, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400104
Panchatikta Ghruta Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

अमृतादि गुग्गुल

उपयुक्तता:

स्रावी त्वचाविकार जैसे पामा, मंडल एवं विचर्चिका, वातरक्त, आमवात, अर्श, सिराकौटिल्यजन्य व्रण, शुक्रदोश, भगंदर, नाडीव्रण, प्रमेह, शोथ, मूत्राश्मरी, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400114
Amrutadi Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

स्वायंभुव गुग्गुल

उपयुक्तता:

श्वित्र एवं अन्य जीर्ण त्वचाविकार, स्रावी कुष्ठ , कण्डु , मुखदूषिका, एककुष्ठ, प्रमेह, पादव्रण, वातरक्त, मधुमेहजन्य क्षुद्रकुष्ठ, बालकों में उत्पन्न पामा, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400284
Swayambhuva Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

गुग्गुल: अस्थिसारता का एक रहस्य

वृध्दावस्था में वात प्रकोप के कारण जीर्ण अस्थिसंधिगत व्याधीयों का आधिक्य पाया जाता है। अब यह स्थापित हो गया है कि संधिगत व्याधियों के वृध्दि में वार्धक्य यह एक महत्त्वपूर्ण घटक है। इसलिए रसायन चिकित्सा से संधिगतवात, आमवात, मन्या-कटि-स्तंभ, आदि जैसे विकारों के उपचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद की जाती है।

बहुविध कारणों से उत्पन्न वार्धक्यजन्य शोथ जनित इन्फ्ल्यामेजींग के कारण वार्धक्यावस्था में व्याधीयों की उत्पत्ती होती है। वसा, संधि, मृद्वस्थि और स्नायु के वार्धक्य से सायटोकाइन्स, किमोकाइन्स और टी.एन.एफ-β की उत्पत्ती होती है, यह सारे घटक शोथ के वृध्दि का कारण है।

वार्धक्यजन्य रक्तस्थित साइटोकाइन्स की वृध्दि से शारीरिक कार्यक्षमता का ह्रास होता है। वार्धक्य से स्टेम सेल्स में वसा उत्पत्ती में वृध्दी और अस्थि उत्पत्ती में ह्रास होता है। (एजींग सेल्स २००४)

सिंहनाद गुग्गुल

उपयुक्तता:
आमवात, वातव्याधि, श्वास, कास,
कुष्ठ, वातरक्त, उदर, गुल्म, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400064
Sinhanad Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

गोक्षुरादि गुग्गुल

उपयुक्तता:
आमवात - निरामावस्था, मूत्रकृच्छ्र,
मूत्राघात, मूत्राश्मरी, प्रमेह, वातव्याधि,
वातरक्त, शुक्रदोष, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400024
Gokshuradi Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

पंचामृत लोह गुग्गुल

उपयुक्तता:
वातविकार, मन्याकशेरुकागत वात,अवबाहूक,
गृध्रसी, वातनाडी विकृती, संधिगत वात, मांसशोष,
मस्तिष्क दौर्बल्यजन्य शिरःशूल, अनिद्रा, कंप, गौरव,
मज्जाक्षय से उत्पन्न चिमचिमायन, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400274
Panchamrut Loha Guggul

उपलब्धता :
३० गोली ,६० गोली, १००० गोली

त्रयोदशांग गुग्गुल

उपयुक्तता:
गृध्रसी, कटीशूल, कटीग्रह, गुल्फ एवं
अन्य संधिगत वात, सधिगत वात,
अस्थि-मज्जागत वात, अस्थिसौषिर्य,
अस्थिभग्न, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400044
Trayodashang Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

योगराज गुग्गुल

उपयुक्तता:
वातव्याधि, कुष्ठ, ग्रहणी, वातरक्त,
अर्श, भगंदर, अरुचि, अग्निमांद्य,
उदरशूल, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400084
Yogaraj Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

महायोगराज गुग्गुल

उपयुक्तता:
वातव्याधि, उदावर्त, कुष्ठ, गुल्म, ग्रहणी,
अपस्मार, वातरक्त, शुक्रदोष, अर्श,
रजोदोष, भगंदर, नपुंसकत्व, अरुची,
वंध्यत्व, अग्निमांद्य, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400094
Mahayogaraj Guggul

उपलब्धता :
३० गोली ,६० गोली, १००० गोली

लाक्षादि गुग्गुल

उपयुक्तता:
अस्थिसौषिर्य, अस्थिभग्न,
अस्थिसौषिर्यजन्य संधिशूल,
अस्थिभग्नोत्तर संधिशूल, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400144
Lakshadi Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

कैशोर गुग्गुल

उपयुक्तता:
वातरक्त, वातरक्तजन्य
संधिशूल, स्रावी त्वचाविकार,
गुल्म, व्रण, आदि ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400014
Kaishor Guggul

उपलब्धता :
६० गोली, १००० गोली

बाल्यावस्थाः आजीवन स्वास्थ्य का मूलाधार

बाल्यं वृद्धिश्छविर्मेधा त्वग्दृष्टिः शुक्रविक्रमौ।
बुद्धिः कर्मेन्द्रियं चेतो जीवितं दशतो ह्रसेत्।।
–शा.सं.प्र.ख.६/६२

आचार्य शारंगधर ने संपूर्ण जीवनकाल के वृध्दि और विकास के चरणों का वर्णन किया है, जब अनुमानित जीवनकाल लगभग १२० वर्ष का था। इस श्लोक में बाल्य से लेकर मृत्यु तक १२ अवस्थाओं – १. बाल्य, २. वृद्धि, ३. छवि, ४. मेधा, ५. त्वचा, ६. दृष्टिः, ७. शुक्र, ८. विक्रम ९. बुद्धि, १०. कर्मेन्द्रिय, ११. चेतस्, १२. जीवित का वर्णन किया गया है।

यहां यह स्पष्ट होता है कि आगामी चरण की वृद्धि और विकास पूर्ववर्ती चरण की गुणवत्ता पर निर्भर होती है। बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक के पोषण का भविष्यकालीन वृद्धि और विकास पर बहुत प्रभाव पडता है। पोषण में विभिन्न घटकों के अभाव से वयस्क स्वास्थ्य विकास पर दुष्प्रभाव पडता है।

आधुनिक अध्ययनों से यह ज्ञात हो रहा है की, संसार भर में कई आयुसंबंधी विकार (Life Style or Aging related Disorders) बाल्यावस्था और प्रौढ अवस्था में दिखाई दे रहे हैं। यदि बाल्यावस्था में ही इन हेतुओं का परिवर्जन किया जाए तो प्रौढ अवस्था में होनेवाले विकारों में पर्याप्त कमी की जा सकती है। (इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ एंड डेवलपमेंट, मार्च २०१९)

बाल्यावस्था जीवन का आरंभ होने के कारण इस अवस्था में स्वास्थ्यपूर्ण प्रौढ अवस्था की नींव खडी की जा सकती हैं। इस बाल्यावस्था में यदि स्वास्थ्यरक्षा न की जाए तो व्यक्ती को भावी आयुष्य में अनेक दीर्घकालीन विकारों का खास करके हृदयरोग, मधुमेह, स्थौल्य आदि का सामना करना पडता है।

कोषाणुओं का स्वास्थ्य अच्छा रहना सार्वदैहिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। आधुनिक काल में इस विषय पर गहरा अनुसंधान हुआ हैं। इस अनुसंधान से स्पष्ट होता है की, Developmental Programming बाल्यावस्था में ही आरंभ कर देनी चाहिए। बाल्यावस्था में होनेवाली वृद्धि में प्रकृती का योगदान तो होता है परंतु प्रकृति के साथ आहार–विहार के भी दूरगामी परिणाम निश्चित दिखाई देते है। इस स्थिती को आधुनिक विज्ञान में Developmental Origins of Health and Disease (DOHaD) कहते है।

बाल्यावस्था में यदि आहार पोषक तत्व का अभाव हो, तो सर्व धातुओं का पोषण उचित रूपसे नहीं होता है। परिणाम स्वरुप प्रौढ अवस्था में अनेक विकार होने की संभावनाएं बढती है। (Early Life Origins of Ageing and Longevity, HAL, Volume 9)

बाल्यावस्था में सेवन किया जानेवाला उत्कृष्ट आहार और विहार न केवल बाल्यावस्था के वृध्दि और विकास का कारण होता है, परंतु वयस्क अवस्था के स्वास्थ्य पर भी उसका अच्छा परिणाम दिखाई देता है। यह कार्य शिशुभरण रस के सेवन से किया जा सकता हैं। शिशुभरण रस एक सुरक्षित और परिणामकारक उपाय हैं, जिससे बाल्यावस्था के स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव और आयुसंबंधी विकारों से रक्षा होगी।

वर्णायुःकान्तिदं श्रेष्ठं पुष्टिकृद्बलवर्धनम् ।
बालानां वह्निकृच्चैव दन्तोद्भेदगदापहम्।।

शिशुभरण रस यह वर्णप्रसादक, सामान्य स्वास्थ्य और शक्तिवर्धक औषधी है, जो बाल्यावस्था के समुचित वृध्दि और विकास में सहायता करती है।

शिशुभरण रस बाल्यावस्था में क्षुधावर्धक और पाचक के रूप में कार्य करता है। यह दंतोद्भेदजन्य व्याधीयों में भी उपयोगी है।

Sr.	Shishubharan Rasa
1.	**Kumarkalyan Rasa (Suvarnayukata Premium Quality)** कृशतां वह्निवैकृतम्। रसः कुमारकल्याणो नाशयेन्नात्र संशयः।।
2.	**Sitopaladi Choorna** श्वासकासक्षयहरं .....मन्दाग्निं ज्वरमूर्ध्वगतं व्यपोहति।
3.	**Sanshamani Vati** गुडूची कटुका तिक्ता रसायनी लघ्वी बल्याऽग्निदीपनी दोषत्रयज्वरक्रिमिवमीन्हरेत् श्वासकासनुत् ।
4.	**Madhumalini Vasant Rasa** मधुमालिनीनामायं वसन्तो वैद्य पूजितः। अनुपानविशेषेण बलपुष्टिप्रदायकः।।
5.	**Draksha kwath** द्राक्षा पक्वा सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः।

शिशु भरण रस

उपयुक्तता: शिशू की, प्राकृत वृद्धि, शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक विकास, बलवान् रोगप्रतिकारशक्ति, दंतोद्भेदजन्य विकार, आदि ।

मात्रा एवं अनुपान :
शिशू
२ वर्ष तक – १ गोली दिन मे एक बार
२ से ५ वर्ष तक – १ गोली दिन मे २ बार
५ वर्ष के उपर – २ गोली दिन मे २ बार

सेवन विधि:
गोली को पिसकर शहद, गोघृत, गोदुग्ध के साथ अथवा वैद्यकिय सलाहनुसार ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902634
Shishu Bharan Rasa

उपलब्धता :
३० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

हृद् संरक्षण: सी. पी. आर

(Cardio-Pulmonary- Resuscitation)

असंक्रामक विकार विश्वभर में संक्रामक विकारों पर हांवी हो गए है। वर्तमानकाल में सामाजिक और आर्थिक स्तर पर हृदय विकार, असंक्रामक विकारों के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधीत्व करते है।

हृदय रोग, प्रति वर्ष १७३ लाख मृत्यु का कारण बनते हैं। विश्व में हृदय रोग मृत्यु का प्रथम कारण है। जिसका वर्ष २०३० तक २३६ लाख तक बढने का अनुमान है। (जर्नल ऑफ द अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉजी, २०१२)

भारत में हृदयरोग से १९९० में १५.२% (१३ लाख) और २०१६ में २८.१% (२८ लाख) मृत्यु का दर पाया गया। (द लैंसेट ग्लोबल हेल्थ, दिसंबर २०१८) इसलिए हृदय रोग का उपचार ही नही, बल्कि निवारण भी समय की मांग है। हृदय रोग घातक होते है और अधिकांश समय आजीवन विकलांगता को भी उत्पन्न करते है। हृदय रोग की पारंपारिक चिकित्सा लाक्षणिक, महंगी और पुनरावृत्ति को रोकने में विफल रहती है। हृदयरोग पर विश्व स्वास्थ्य संगठना की नवीनतम नितियाँ इस व्याधी के रोकथाम पर ध्यान केंद्रित करती है और निवारण को सर्वोतम चिकित्सा का दर्जा भी देती है। सद्यकालीन अध्ययन, स्थौल्य, मधुमेह आदि संबंधी रोग लक्षणों को हृदयरोग विकास में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप मे उजागर करते है, एक तथ्य जो हजारों वर्ष पहले आयुर्वेद ने स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त, आयुर्वेद हृदय रोग के मूल कारणों में एक विस्तृत अंतर्दृष्टि प्रदान कर व्यापक चिकित्सा का मार्ग दर्शाता है।

विभिन्न चयापचय असंतुलन के परिणामस्वरूप रक्त, कोशिका और उतकों में शोथकारक घटक सक्रिय होते है, जिससे इन्फ्ल्यामेजींग उत्पन्न होकर हृदय रोग की संभावना बढाती है। इन शोध निष्कर्षों का अनुवाद (ट्रांसलेशन) माधव निदान में वर्णित हृदय रोग संप्राप्ति में स्पष्टत: दिखाई देता है। हृदय रोग संप्राप्ति के घटक इस प्रकार है।

अत्युष्णगुर्वन्नकषायतिक्तश्रमाभिघाताध्यशनप्रसङगैः।
सञ्चिन्तनैर्वेगविधारणैश्च हृदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः।।

आहार के साथ–साथ मानसिक घटक, हृदय विकारों के लिए जिम्मेदार है। जो लंबे समय तक बने रहने पर इन्फ्ल्यामेजींग तंत्र को प्रेरित कर हृदयरोग में विकसित होते है।

हृदयरोग और इन्फ्ल्यामेजींग से संबंधी कुछ प्रमुख निष्कर्षः

१. आनुवंशिक संवेदनशीलता
२. माईटोक्रोन्ड्रियल डिसफंक्शन
३. कोशिका वार्धक्य
४. कुक्षिगत स्थौल्यता से उत्पन्न शोथकारक घटक
५. माइक्रोबायोटा और आंत्रदुष्टी
६. रक्त में शोथकारक घटक
७. जीर्ण संक्रमण से प्रतिरक्षा कोशिका में आंतरिक दोष

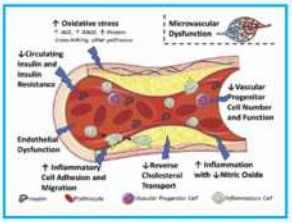

आयुर्वेद के अनुसार हृदयरोग का प्राथमिक कारण विकृत चयापचय से संबंधित हैं। विकृत चयापचय से आम का निर्माण होता है, जो रसधातु सहित सप्तधातु का पोषण बाधित करता है। यह आम अथवा दुष्ट रसधातु से आयु संबंधी विकार जैसे स्थौल्य, मधुमेह, धमनीप्रतिचय आदि उत्पन्न होते है। यही आम अथवा दुष्ट रसधातु जब हृदय में स्थानसंश्रित होता है, तब हृदय रोग व संबंधित लक्षणों को उत्पन्न करता है।

दूषयित्वा रसं दोषा विगुणा हृदयं गताः।
हृदि बाधां प्रकुर्वन्ति हृद्रोगं तं प्रचक्षते।।

आमजनित दुष्ट रसधातु की चिरकालिता से शोथकारक घटक सक्रिय होते है, वे विभिन्न अंग प्रणालीयों में शोथ उत्पन्न करते है। शोथ प्रक्रिया अपने प्राकृत प्रतिरक्षा कर्म (संक्रमण विरोधी रक्षातंत्र) के अलावा अगर चिरकाल बनी रहती है तो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक बन जाती है।

रसधातु हृदयगत रक्तवाहिनीयों में अंतस्त्वचा (एंडोथेलियम) की संरचनात्मक और कार्यात्मक अखंडता को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है। रसधातु जब आम से दुष्ट होकर हृदयगत रक्तवाहिनीयों में स्थानसंश्रित होता है, तब धमनीप्रतिचय जैसे नानात्मज कफ विकार उत्पन्न कर हृदयगत रक्तवाहिनी की अंतस्त्वचा और उतकों को नुकसान पहुंचाता है। आचार्य चरक ने हृदयरोग के उपचार और रोकथाम के लिए इसप्रकार वर्णन किया हैः

तन्महत् ता महामूलास्तद्योजः परिरक्षता।
परिहार्या विशेषेण मनसो दुःखहेतवः।।
हृद्यं यत् स्याद्यदौजस्यं स्रोतसां यत् प्रसादनम्।
तत्तत् सेव्यं प्रयत्नेन प्रशमो ज्ञानमेव च।।

इसमें हृदय रक्षा अर्थात हृदय कोशिका अथवा उतकों का इन्फ्ल्यामेजींग से संरक्षण एक प्रमुख घटक है। स्वस्थ रसधातु को अबाधित रखकर हम हृदय स्वास्थ्य सुनिश्चित कर सकते है।

हृदय को क्षति से संरक्षण और बल देने हेतु, हृदय स्वास्थ्य की पुनर्स्थापना, संरक्षण तथा इन्फ्ल्यामेजींग को कम करना महत्वपूर्ण है।

हृद्रोग चिंतामणि रस एक उत्तम हृद्य रसौषधी है। हृद्रोग चिंतामणि रस में 'चिंतामणि' से पता चलता है कि यह हृदय स्वास्थ्य संरक्षण और हृद्रोग के प्रतिरोध में चिंतामणि समान कार्य करता है। हृद्रोग चिंतामणि रस यह बृहत्वातचिंतामणि रस, पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज, अभ्रक भस्म, अकीक पिष्टी जैसे शास्त्रीय और समय परीक्षित रसौषधी को अर्जुन, जटामांसी, मंजिष्ठा, दशमूल आदि औषधी के साथ मर्दन अथवा भावना देकर संयोजित किया गया है।

हृद्रोग चिंतामणि रस के घटक औषधीयों की फेनोलिक प्रचुरताः

१. लसिका स्थित शोथकारक घटकों को कम कर अंतरालीय शोथ का नाश करती है।
२. रियाक्टीव ऑक्सिजन स्पेशीज और एंटीऑक्सिडेंट एंजाइम में समस्थिति रखती है।
३. लिपिड पेरोक्सिडेशन को नियंत्रित कर तनाव को न्यूनाधिक करती है।
४. नाइट्रिक ऑक्साइड प्रभाव के उत्पादन को विनियमित कर शोथजनकों को कम करती है।
५. रक्तघनता विरोधी और रक्तवाहिनी संजनन कार्य करती है।

हृद्रोग चिंतामणि रस, वास्तव में हृद्रोग में सी.पी.आर (Cardio-Pulmonary-Resuscitation) के समान जीवनरक्षी कार्य करता है।

हृद्रोग चिंतामणि रस

उपयुक्तता:
हृद्रोग, हृद्द्रव, आयासेन श्वास (परिश्रम), हृद्शूल, धमनीप्रतिचय, हृद्दौर्बल्य, आदि ।

मात्रा एवं अनुपान :
१ से २ गोलियाँ दिन में एक या दो बार दशमूलारिष्ट, अर्जुनारिष्ट, गोदुग्ध, शहद, कोष्ण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार ।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902594
Hrudroga Chintamani Rasa

उपलब्धता :
३० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

पुरुष वंध्यत्व में रामबाण: गुणवत्तापूर्ण बीजपोषण

पुरुष वंध्यत्व एक पुरुष की विकलांगता को दर्शाता है, अर्थात् एक प्रजननक्षम स्त्री में गर्भाधान करने की कार्यक्षमता में हानी को दर्शाता है। अज्ञात हेतु से उत्पन्न पुरुष वंध्यत्व लगभग १०–१५% पुरुषों को उनकी प्रजनन आयु में प्रभावित करता है। (एन.पी.जे. जीनोम मेड, अगस्त, २०१६) प्रजनन दर में गिरावट के लिए अन्य घटकों के अलावा, वीर्य की गुणवत्ता में गिरावट एक प्रमुख कारण है।

रीप्रोडक्टिव बायोलॉजी एंड एंडोक्रायनोलोजी, २०१८ में प्रकाशित लेख के अनुसार वीर्य के मापदंड जैसे वीर्यमात्रा, शुक्राणु मात्रा, गतिशीलता, शुध्द शुक्र रूप, शुक्राणु जीवनक्षमता की भारतीय पुरुषों में समय के साथ गिरावट आई है। इन वीर्य मापदंडो में गिरावट का मुख्य कारण दोषपूर्ण शुक्रजनन है। आचार्य वाग्भट ने सूत्रस्थान के प्रथम अध्याय, आयुष्कामीय में वाजीकरण को बीजपोषण के रूप में इस प्रकार वर्णित किया है:

चत्वारिंशोऽनपत्यानामध्यायो बीजपोषणः।

आचार्य वाग्भट के अनुसार वाजीकरण औषधी बीजपोषण अथवा शुक्रजनन को सुधार अथवा उन्नति प्रदान करती है। शुक्रजनन (बीजपोषण) सेमीनीफेरस टयुबुल्स के उपकला में शुक्राणु उत्पादन की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में शुक्राणुजन्य स्टेम सेल्स (एस.एस.सी) को अपक्व स्पर्मेटोगोनिया का उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाता है, शुक्राणुकोशिका अपक्व शुक्राणु स्पर्म्याटिड और अंत में परिपक्व शुक्राणु में रूपांतरीत हो जाते है।

सर्टोली कोशिकाएं शुक्रजनन में एक महत्वपूर्ण घटक है। पुरुष वंध्यत्व नियंत्रण के लिए सर्टोली कोशिकाओं के कार्य, हार्मोन समस्थिती और ग्रोथ फॅक्टर से संबंध का ज्ञान महत्वपूर्ण है। सर्टोली कोशिका के कार्य, जैसे पोषक तत्त्वों की आपूर्ति, सेल जंक्शन में रखरखाव, जर्म सेल के माइटोसिस और मीओसिस में सहकार्य आदि पर सामान्य शुक्रजनन कार्य निर्भर है।

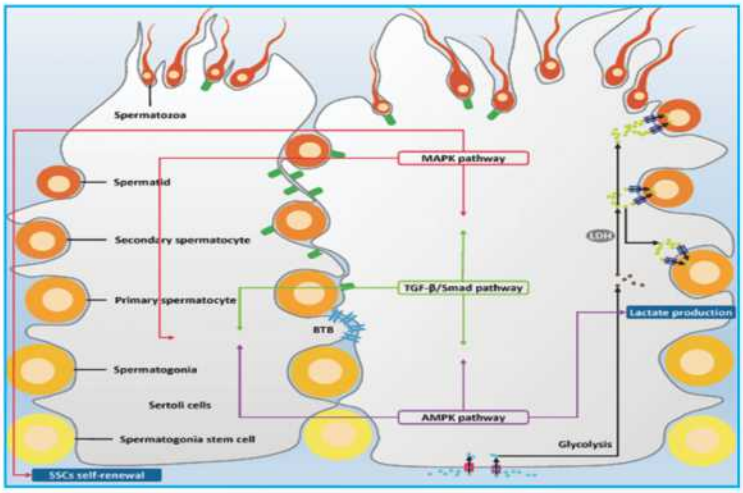

पिछले दशक के अध्ययन अनुसार, शुक्रजनन के दौरान एम.ए.पी.के., ए.एम.पी.के और टी.जी.एफ-β Smad सिग्नलिंग प्रणालीयां एक प्रमुख कार्य दर्शाते है।

Table 1: Multiple signaling pathways in Sertoli cells
The **MAPK** signaling pathway regulates dynamics of tight junctions and adherens junctions, proliferation and meiosis of germ cells, proliferation and lactate production of Sertoli cells;
TGF-β/Smad signaling pathways affect dynamics of tight junctions and adherens junctions, as well as the proliferation of Sertoli cells.
The **AMPK** signaling pathways affect dynamics of tight junctions and adherens junctions, regulates lactate supply as well as the proliferation of Sertoli cells.

यह सिग्नलिंग प्रणालीयां शुक्रजनन के लिए एक जटिल नियामक जालतंत्र बनाने हेतु गठबंधन करते है। वंध्य रुग्ण के सर्टोली कोशिकाओं में इन सिग्नलिंग प्रणालीयों की गतिविधियां विकृत होती है।

शुक्रजनन के दौरान सर्टोली कोशिका स्थित ए.एम.पी.के., एम.ए.पी.के. जैसे प्रणाली के तंत्र को समझना, पुरुष प्रजनन संस्थान में सर्टोली कोशिकाओं के शरीर–क्रियात्मक कार्य में नयी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। इसके अलावा, यह प्रणालीयां पुरुष वंध्यत्व सहित विकृत शुक्रजनन में संभावित चिकित्सा के लक्ष्य साबित होते है। आधुनिक विज्ञान ए.एम.पी. अक्टिवेटेड प्रोटिन कायनेज (ए.एम.पी.के) को शुक्रजनन, शुक्र गतिशीलता, माइटोकॉन्ड्रियल गतिविधी, अॅक्रोसोम प्रतिक्रिया और गर्भाधान करने की क्षमता को नियंत्रन करने के लिए जाना जाता है। यह अन्य शरीर–क्रियात्मक नियामको कों (हाइपोथैलेमस–पिटयूटरी–गोनैडल अॅक्सीस) उर्जा संतुलन से जोडकर प्रजनन कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह स्टेरॉइडोजेनेसिस के द्वारपाल के रुप में कार्य करता है। यह शुक्राणु के लिए एक प्रमुख संकेतक प्रोटिन है। यह पुरुष प्रजनन क्षमता का नियंत्रण और स्टेरॉयड हार्मोन उत्पादन को न्यूनाधिक करने के लिए एक लक्ष्य है।

Average semen parameter values for normal (fertile) Indian men:	
Volume	2.88 ± 0.77 ml
Sperm Concentration	81.08 ± 29.21 per ml
Sperm Motility (Total)	66.37 ± 10.95%
Rapid Linear Progressive Motility	52.64 ± 15.78%,
Normal Morphology	56.68 ± 20.23%
Viability	72.63 ± 8.31%
* Reprod Biol Endocrinol. 2018	

आयुर्वेद सुपरस्पेशिलिटी औषधी बीजपुष्टी रस कल्प – गोक्षुर, शतावरी, यष्टीमधु और आमलकी जैसे वाजीकरण औषधी युक्त है, जो ए.एम.पी.के., एम.ए.पी.के उत्प्रेरक के रूप में प्रस्थापित है। सुवर्णभस्म और पूर्णचंद्रोदय मकरध्वज जैसी रसौषधी, जो शुक्रजनन (बीजपोषण) और पुरुष वाजीकरण को बेहतर करने हेतु बीजपुष्टी रस में समाविष्ट की गई हैं।

बीजपुष्टी रस

उपयुक्तता:
अल्प शुक्र, दुष्ट शुक्र, क्षीण शुक्र, विशुष्क शुक्र, आदि ।

मात्रा एवं अनुपान :
१ से २ गोलियाँ दिन में एक या दो बार गोदुग्ध के साथ या चिकित्सक द्वारा निर्देशित।

Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902654
Beejpushti Rasa

उपलब्धता :
३० गोली (ब्लिस्टर पॅक)

धूतपापेश्वर
१८७२ से आयुर्वेद सेवा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
स्वास्थ्य सेवा विभाग
श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड
१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाडी, मुंबई- ४०० ००४.
फोन : ९१-२२-६२३४ ६३०० फॅक्स : ९१-२२-२३८८ १३०८
ई-मेल : healthcare@sdlindia.com
वेब साईट : www.sdlindia.com

केवल पंजीकृत चिकित्सक, अस्पताल या प्रयोगशालाओं के लिये
© All Copy Rights Reserved